परिशिष्ट 15 **(मसीह)**

यीशु मसीह के बारे में भविष्यद्वाणियां

क. भविष्यद्वाणियों का स्वभाव

बाइबल एक अनोखी पुस्तक हैं और दुनिया की किस पुस्तक की इसके साथ तुलना नहीं की जा सकती। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने आने वाले मसीह, अर्थात यीशु मसीह के बारे में भविष्यद्वाणियों के पूरा होने से सैंकड़ो वर्ष पूर्ण बहुत सी भविष्द्वाणियां की। यीशु मसीह ही एक मात्र वह जन है जिसने इन सारी भविष्यद्वाणियों को पूरा किया। सम्भवत: पुराने नियम की कुछ भविष्यद्वाणियां दूसरे लोगों के जीवन में भी पूरी हुई लेकिन सारी भविष्यद्वाणियां नहीं। हजारों करोड़ों वर्षो(100 000 000 000 000)में केवल एक ही बार ऐसा होने की सम्भावना है कि किसी व्यकित में 8 भविष्यद्वाणियां पूरी हो सकें। लेकिन इस बात के बहुत से प्रमाण हैं जो बताते हैं कि बहुत सी भविष्यद्वाणियां यीशु मसीह के जीवन में पूरी हुई और यही प्रमाण उसे सम्पूर्ण इतिहास में अनोखा बनाते हैं।

पुराने नियम की कई भविष्यद्वाणियां यर्थात रूप में पुराने नियम में ही पूरी हो गयी तथा कुछ बाद के समय में पूरी हुई, लेकिन बहुत कम भविष्यद्वाणियां ऐसी थीं जो नये नियम के समय में कम यर्थात रूप में पूरी हुई। पुराने नियम की भविष्यद्वाणियां कई बार यर्थात रूप म और कई बार नये नियम अयर्थात रूप में पूरी हुई। पुराने नियम की भविष्यद्वाणियां ***पाँच भिन्न तरीकों से नये नियम में पूरी हुई।***

1. नयें नियम में पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों को सीधे तौर पर पूरा होना।

उदाहरण: मत्ती 2:5-6(मीका 5:1)। मसीह वास्तव में बेतलेहम में पैदा हुआ।

पुराने नियम की कुछ और भविष्यद्वाणियां जो सच में नये नियम में पूरी हुई: मत्ती 12:18-21(यशायाह 42:1-4), मत्ती 21:4-5(जर्कयाह 9:9), मत्ती 22: 43-45(भजन संहिता 110:1), मत्ती 24:30(दानिय्येल 7:13-14, जर्कयाह 12:10-14)। इब्रानियों 1:5(भजन 2:7)। इब्रानियों (भजन 110:4)।

2. नये नियम की भविष्यवाणियों का वर्गीकृत रूप में पूरा होना।

उदाहरण के लिए: मत्ती 2:15(होशे 11:1)। होशे बेबीलोन से इस्राएन के निर्गमन को मिस्र से इस्राएल के निर्गमन के साथ जोड़कर भविष्यवाणी करता है। मत्ती इस्राएल के मिस से निर्गमन को लेकर मसीह के मिस्र से बाहर निकलने की बात करता है। अत: मसीह इस्राएल को प्रदर्शित करता है। परमेश्वर ने यह ठाना है कि उसने इस्राएल के लोगों के लिए जो कुछ चाहा वह परमेश्वर के दास (यीशु मसीह) में होकर पूरा होगा(यशायाह 49:3,6)!इसके अलावा बहुत सो ऐसी भविष्यवाणियां हैं जो वर्गीकृत रूप में पूरी हुई: मत्ती 3:17 (भजन संहिता 2:7); मत्ती 11:5b (यशायाह 61:1), मत्ती 13:35 (भजन संहिता 78:2), मत्ती 16:27 (भजन संहिता 62:12), मत्ती 21:9 (भजन संहिता 118:26-27), मत्ती 21:42 (भजन संहिता 118:22), मत्ती 26:31 (जर्कयाह 13:7), मत्ती 27:34 (भजन संहिता 69:21), मत्ती 27:35 (भजन संहिता 22:18), मत्ती 27:39 (भजन संहिता 22:7), मत्ती 27:41-43 (भजन संहिता 22:7-8); मत्ती 27:46 (भजन संहिता 22:1), यूहन्ना 13:18 (भजन संहिता 41:9); यूहन्ना 15:25; 2:17 (भजन संहिता 69:4,9); यूहन्ना 20:25 (भजन संहिता 22:16); इब्रानियों 1:8-9 (भजन संहिता 45:6-7), इब्रानियों 2:5-8 (भजन संहिता 8:4-6), इब्रानियों 2:12 (भजन संहिता 22:22), इब्रानियों 10:5-6 (भजन संहिता 40:6-8)।

3. पुराने नियम की भविष्यद्वाणीं की सदृश रूप में नये नियम में परिपूर्णता।

उदाहरण: मत्ती 2:18(यिर्मयाह 31:15)। पुराने नियम में राहेल, जो युसुफ की माँ थी(जो इस्राएल के पूर्वराज्य को भी प्रस्तुत करती है)और उसका बेटा बिन्यामीन(जो यहूदा के दक्षिणी राज्य को प्रदर्शित करता है) दोनो रोये व उन्होंने विलाप किया क्योंकि उनके बच्चों अर्थात उसके वंशजों को इस्राएल के रामा से (दोनों देशों के बीच की सीमा) अश्शूर और बेबीलोन ले जाया जा रहा था। नये नियम में बेतलेहम में माताएं इसलिए रो व विलाप कर रहीं थी क्योंकि राजा हेरोदेस उनके बच्चों को मार रहा था। बाइबल की दूसरी घटना पहली घटना के ही सदृश है।

अन्य पुराने नियम की भविष्यवाणी जिसे सदृश रूप में हम नये नियम में भी देख सकते हैं: मत्ती 1:23(यशायाह 7:14), मत्ती 4:1-4(व्यवस्थाविवरण 8:1-3), मत्ती 10:35-36(मीका 7:6), मत्ती11:5 (यशायाह 35:5-6), इब्रानियों 2:13(यशायाह 8:17-18)।

4. पुराने नियम की भविष्यद्वाणी के बोध का नये नियम में पूरा होना।

उदाहरण: मत्ती 2:23(पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता का बोध)। नाज़रीन शब्द नासरत से आये व्यक्ति को सम्बोधित करता है। जिस प्रकार से नासरत दाऊद का प्रसिद्ध नगर था, उसी प्रकार नासरत एक छोटा सा तुच्छ लोगों को निरर्थक नगर था। हालांकि मत्ती 2:23 के सन्दर्भ में पुराने नियम में कोई विशेष भविष्यवाणी नहीं की गयी है,लेकिन "जो कुछ भविष्यद्वक्ताओं द्वारा कहा गया था" उस बात को दर्शाता हैं जो भविष्यद्वक्ताओं की मसीह को लेकर समझ में आयी थी। मसीह तुच्छ जाना जाएगा: उसे लोग तुच्छ जानेगें और उसका अनादर करेगें(भजन 22:6-8;69:8,20,21; यशायाह 11:1; 9:7; 53:2,3,8; दानिय्येल 9:26)।

5. पुराने नियम में मसीह से सम्बन्धित भविष्यद्वाणियों का नये नियम में पूरा होना।

उदाहरण : इब्रानियों 1:10-12(भजन संहिता 102:25-27)। पुराने नियम में जिन बातों के लिए परमेश्वर पिता को श्रेय दिया गया उन्हीं बातों के नये नियम में मसीह, यीशु मसीह को श्रेय दिया गया।

मसीह से जुड़ी पुराने नियम की अन्य भविष्यद्वाणियां जो नये नियम में जाकर पूरी हुई: (यूहन्ना 10:11-14 (यहेजकेल 34:11-16; यशायाह 40:11), मत्ती 27:9-10 (जकर्याह 11:12-13; यिर्ममाह 18:2), फिलिप्पियों 2:10 (यशायाह 45:23); इब्रानियों 1:6 (व्यवस्थाविवरण 32:43 मृतक सागर में मिले चर्म पत्रों में)।

ख. यीशु मसीह के जन्म के सम्बन्ध में भविष्यवाणी

1. यीशु मसीह परमेश्वर है जिसने मनुष्य का रूप धारण किया (4/5 ई.पू)

भविष्यद्वाणी: यशायाह 7:14 (740-680 ई.पू) पूरा होना: मत्ती 1:18-23(63-66 ई.प)

विवरण: वे स्त्रियां व बच्चे कौन थे? यशायाह ने आरम्भ में ही बिना पिता के नाम का जिक्र किये हुए,भविष्यद्वाणी की कि एक कुंवारी गर्भवति होगी और उसका नाम 'इम्मानुएल' रखेगी जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ। सर्वप्रथम यह भविष्यद्वाणी यर्थात में पुराने नियम में ही पूरी हो गयी। यशायाह 7:14 में सम्बोधित किया गया बच्चा एक साधारण बालक था जो आहाज राजा(734-726 ई.पू) में पैदा हुआ। इससे पहले कि वह बालक भले और बुरे के बीच में अन्तर करना सीख पाता (यशायाह 7:15-17) अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर ने आकर उत्तरी इस्राएल व उसकी राजधानी सामरिया को 734 ई.पू में (2 राजा 15:29) और सीरीया (अराम) को उसकी राजधानी दमिश्क सहित जीत कर लूट लिया(2राजा 16:9)।

लेकिन नये नियम क प्रकाशन के अनुसार यह भविष्यवाणी दूसरी बार पूरी हुई लेकिन इस पूर्ण होना शाब्दिक नहीं था(मत्ती 1:22-23)। अपने अगम्य ज्ञान के अनुसार परमेश्वर ने पहले ही देख लिया था कि कुवारी मरियम बिना किसी मानवीय पिता की सहायता के इम्मानुएल की वास्तविक मां बनेगी। यशायाह 7:14 में दर्शाया गया बच्चा, बच्चे के रूप में आनेवाले मसीह का प्रतीक था। परमेश्वर के पुत्र ने मनुष्य के पुत्र के रूप में जन्म लिया(लूका 1:26-37; यूहन्ना 1:1-14; फिलिप्पियों 2:5-7)। उसका नाम, उसकी पहिचान को प्रगट करता है: अर्थात परमेश्वर हमारे साथ(मत्ती 1:23;यूहन्ना 1:14; 1 यूहन्ना 1:1-3)

2. यीशु का जन्म एक बालक के रूप में हुआ।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 9:6-7। पूरा हुआ: लूका 2:6-7 (60-61 ई.प.); प्रकाशितवाक्य 12:5 (95-96 ई.प.)

3. यीशु का जन्म बेतलेहम में हुआ।

भविष्यद्वाणी: मीका 5:2 (737-680 ई.पू.)। पूरा हूआ: मत्ती 2:1-6.

4. राजा हेरोदेस ने यीशु को मारने का प्रयास किया।

भविष्द्वाणी: यिर्ममाह 31:15-17 (627-586 ई.पू.)। पूरा हुआ: 2:17-18.

5. राजा हेरोदेस की मृत्यु यीशु मिस्र में रहा।

भविष्यद्वाणी: होशे 11:1 (754-714 ई.पू.)। पूरा हुआ: मत्ती 2:14-15.

ग. यीशु मसीह के जीवन के बारे में भविष्यवाणियां

6.यीशु मसीह के आगे आगे रास्ता तैयार करने वाले यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का जन्म होना।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 40:1-5; मलाकी 3:1-3, 4:5-6 (432-420 ई.पू.)। पूरा हुआ: मत्ती 3:1-3, cf. 11:7-14, 17:10-13.

7. यीशु गलील में पला बढ़ा और उसने वहीं पर अपनी सेवा को शुरू किया।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 9:1-2. पूरा हुआ: मत्ती 3:13, 4:12-17, 9:35; लूका 4:14-21.

8. पवित्र आत्मा यीशु पर उतरा (ई.प 26)

भविष्यद्वाणी: यशायाह 11:9:1-2. पूरा हुआ: मत्ती 3:16-17; यूहन्ना 1:32-33 (70-98 ई.प.)

9. परमेश्वर ने गवाही दी कि वह यीशु ही उसका प्रिय पुत्र है।

भविष्यद्वणी: यशायाह 42:1. पूरा हुआ: मत्ती 3:16-17.

10. यीशु ने शिक्षा प्रदान करने से पूर्व परमेश्वर की वाणी को सुना।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 50:4-5. पूरा हुआ: मरकुस 1:35 (44-46 ई.प.)

घ. योशु मसीह के उद्धार के कामों के बारे में भविष्यद्वाणी

11. यीशु मसीह अन्तिम भविष्यद्वक्ता है(ई.प. 26-30)

भविष्यद्वाणी: व्यवस्थाविवरण 18:15-19 (1407 ई.पू.). पूरा हुआ: प्रेरितों के काम 3:22-23 (61 ई.प.); इब्रानियों 1:1-2 (पूर्व 64 ई.प.)

विवरण: मूसा (1527-1407ई.पू) ने भविष्यद्वाणी की: परमेश्वर ने मुझसे कहा...'इसलिए मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूँगा; और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा; और जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वहीं वह उनको कह सुनाएगा। और जो मनुष्य मेरे वह वचन जो वह मेरे नाम से कहेगा ग्रहण न करेगा, मैं उसका हिसाब उससे लूँगा।" (व्यवस्था विवरण)। "जो कोई उस भविष्यद्वक्ता की न सुने, लोगों में से नष्ट किया जाएगा।"(प्रेरितों 3:22-23)। नया नियम दर्शाता है कि यीशु मसीह धरती पर सर्वश्रेष्ठ व अन्तिम भविष्यद्वक्ता था। पुराने नियम के सारे भविष्यद्वक्ता यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के साथ खत्म हो गये(मत्ती 11:13)। यीशु मसीह परमेश्वर है जिसने परमेश्वर होते हुए भी मनुष्य का रूप धारण किया। परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा अपने आप को प्रगट किया(यूहन्ना 1:1, 14-18) वह सत्य और अनुग्रह का लाने वाला ठहरा। और यीशु मसीह में होकर परमेश्वर ने अपने अटल व निर्णायक वचन को बोला(इब्रानियें 1:1-2)। उसने अधिकार के साथ अपनी बातों को बोला और वह हमसे आज्ञापालन करने की अपेक्षा करता है। अत: जो कोई प्रभु यीशु मसीह की बातों को नहीं सुनता है, वह वास्तव में परमेश्वर की बात को नहीं सुनता है(यूहन्ना 5:34-36; 14:23-24)। जो कोई यीशु का आदर नहीं करता है वह परमेश्वर का आदर नहीं करता(यूहन्ना 5:23)। जो कोई यीशु को नहीं जानता, वह परमेश्वर को नहीं जानता। जो कोई यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करता वह परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता(यूहन्ना 12:44)। तो कोई यीशु मसीह को स्वीकार नहीं करता वह परमेश्वर को अस्वीकार करता है।

12. भविष्यद्वक्ता के रूप में, यीशु ने दृष्टान्तों में उद्धार के संदेश पर दावा किया।

भविष्यवाणी: यशायाह 6:9-10; भजन 78:2(आसाप, 960ई.पू)। पूरा होना: मत्ती 13:10-17,34-35।

13. भविष्यद्वक्ता के रूप में, यीशु ने संसार की सारी जातियों को उद्धार प्रदान किया।

भविष्यवाणी: यशायाह 42:1-7; 49:6; हाग्गै 2:6-7(520 ई.पू)। पूरा होना: मत्ती 12:15-21

वर्णन: मसीह का उद्देश्य क्या था? यशायाह ने भविष्यवाणी की कि परमेश्वर का दास जाति जाति के लिए न्याय का प्रबन्ध करेगा। वह अन्धों की आँखों को खोलेगा, वह बन्दियों को बन्धुवाई से मुक्त करेगा और अन्धकार में बैठे हुए लोगों को आज़ाद करेगा। परमेश्वर के दास को एक भविष्यद्वक्या या अधिकारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है- अर्थात 'दूसरा मूसा'। उसके इस दुनिया में आने का मकसद सारी धरती पर न्याय स्थापित करना है(समानान्तर वचन 1 कुरिन्थियों 15:14-28)! यह भविष्यद्वाणी पहले तो शाब्दिक तौर पर पुराने नियम में पूरी हुई। लेकिन इस भविष्यद्वाणी के प्रभाव का क्षेत्र इस्राएल के लोगों से बढकर था। यह इस्राएल व अन्यजातियों के आत्मिक अंधेपन तथा उनकी आत्मिक गुलामी के बारे में (यशायाह 42:18, 20; 43:8; 49:6) बात करता है।

मसीह किन लोगों की सेवा करेगा? यशायाह ने भविष्यद्वाणी की कि मसीह सारी जातियों के लिए न्याय का प्रबन्ध करेगा तथा अन्यजातियां उसकी ओर अपेक्षा के साथ देखेंगी(यशायाह 42:1.4)। अत: उसके सारे उद्धार के काम धरती के सारे राष्ट्रों व सारी जातियों के लिए किये गये हैं।

मसीह अपना काम कैसे पूरा करेगा? यशायाह ने भविष्यवाणी की कि मसीह सड़कों पर खड़ें होकर न चिल्लायेगा और न गलियों में उसकी आवाज सुनी जाएगी। वह लोगों पर अपनी बात सुनने के लिए किसी भी तरह का कोई ज़ोर नहीं डालेगा। वह विराधियों से कोई बहस नहीं करेगा। वह अपने कार्य को बढ़े चुपचाप और विनम्रता के साथ,दिखावटी लोगों के ध्यान में आये बगैर पूरा करेगा। वह दया और भलाई द्वारा कार्य करेगा।

क्या वह अपना कार्य पूरा करेगा? यशायाह इस बात को दावा करता है कि मसीह अपना काम बिना थके और बिना रूके पूरा करेगा(यशायाह 42:4; यूहन्ना 17:4)। वह विरोधियों को सामना करेगा, लेकिन अन्त में यह सिलसिला खत्म हो जाएगा(यशायाह 9:7; 50:6; 53:5) और वह अपनी मंजिल को प्राप्त कर लेगा।

भविष्यवाणियों के नये नियम के समय में पूरे होने के दौर शुरू हो जाता है(मत्ती 12:15-21)। यीशु मसीह के प्रथम आगमन के दौरान यीशु ने लोगों को उसके कामों के बारे में बताने के लिए मना किया ताकि उसे बेकार में अपने कामों को करने में कोई दिक्कत न हो। उसने कमजोर और बीमार लोगों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। उसने अन्धों को आँखें(यूहन्ना 9:39-41) और पापों के बन्धन में बँधे लोगों को छुटकारा दिया(यूहन्ना 8:30-36)। लेकिन उसकी मृत्यु और उसके पुनरूत्थान क बाद उसने अपने चेलों को न केवल इस्राएल में वरन संसार की सारी जातियों मं (मरकुस 16:15; मत्ती 28:18-20) सुसमाचार सुनाने का आदेश दिया। यीशु ने अपने उद्धार के काम को अपने प्रेरितों के द्वारा किया और वह इस काम को इस संसार में कलीसिया के द्वारा करता है। (सामान्तर वचन लूका 1:1-4 व प्रेरितों 1:1-8)।

14. एक भविष्यद्वक्ता के रूप में, यीशु ने परमेश्वर के अनुग्रह काल का प्रचार किया।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 61:1-2, पूरा होना : लूका 4:18-19

15. यीशु मसीह महायाजक है।

भविष्यद्वाणी: भजन 110:4 पूरा होना: इब्रानियों 7:15-28

वर्णन: दाऊद(1011-971 ई.पू) ने भविष्यद्वाणी की : "परमेश्वर ने ठाना है ओर वह अपना मन नहीं बदलेगा: 'आप मलीकिसिदक की रीति पर सदा काल के लिए महायाज हैं।"

नया नियम यीशु मसीह को महायाजक बताता है। बाकि सारे महायाजकों के विपरीत यीशु निष्पाप, पवित्र, शुद्ध, पापियों से अलग किया गया, और स्वर्ग से भी ऊँचा उठाया गया है(इब्रानियों 7:26-28)। दूसरे याजकों से बिल्कुल अलग,जो प्रतिदिन स्वयं अपने पापों के लिए बलिदान चढ़ाया करते थे, यीशु मसीह ने हमेशा के लिए एक ही बार सम्पूर्ण मानव जाति के लिए खुद को एक बलिदान के रूप मं चढ़ा दिया(इब्रानियों 9:6-14,25-26)। पुराने नियम के सारे महायाजकों से विपरीत, जो मृत्यु के कारण ठहर नहीं पाते थे, यीशु मसीह सदा के लिए महायाजक बन गया। मृतकों में से जी उठने के पश्चात यीशु सदा काल के लिए जीवित है और वह सदाकाल के लिए महायाजक बन गया है(इब्रानियों 7:15-25)। सारे महायाजकों के विपरीत यीशु हमारी सेवा करता है, लेकिन किसी मनुष्यों के बनाये हुए मन्दिर में नहीं,वरन स्वर्ग में परमेश्वर की उपस्थिति में(इब्रानियों 9:24)। इसके अलावा सारे याजकों से अलग, यीशु हमारी कमज़ोरियों में भी हमारे साथ रहता है, क्योंकि सारी बातों में वह हमारे समान परखा तो गया लेकिन निष्पाप निकला(इब्रानियों 4:14-16; 2 :17-18)।

16. याजक के तौर पर, यीशु मसीह ही वह जन है जिसमें होकर परमेश्वर सारी जातियों को आशीष प्रदान करता है।

भविष्यद्वाणी: उत्पत्ति 22:18 (अब्राहम, 2167-1992 ई.पू.). पूरा हुआ: गलातियों 3:8,16 (50 ई.प.)

17. याजके तौर पर, यीशु एक अच्छा चरवाहा है।

भविष्यद्वाणी: मीका 2:12-13; यहेजकेल 34:11-16,23; 36:25-28; 37:23-24 (593-571 ई.पू.). पूरा हुआ: यूहन्ना 10:11-18.

18. याजक के तौर पर, यीशु ने बोझ से दबे व बीमारों की सहायता की।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 53:4. पूरा हुआ: मत्ती 8:14-17.

19. महायाजक के तौर पर, यीशु मसीह परमेश्वर के भवन को स्वच्छ रखने को लेकर जोश से भरे थे।

भविष्यद्वाणी: भजन संहिता 69:9 (दाऊद, 1011-971 ई.पू.). पूरा हुआ: यूहन्ना 2:13-17.

20. याजक के तौर पर, यीशु मसीह विश्वासियों के लिए एक मध्यस्थ है।

भविष्यद्वाणी: अय्यूब 16:19-21 (1900-500 ई.पू.). पूरा हुआ: रोमियों 8:34 (प्रकट होना 57 ई.प.); इब्रानियों 7:25.

21. यीशु सर्वश्रेष्ठ राजा है।

भविष्यद्वाणी: भजन संहिता 89:27-29 (971-931 इ.प.); यशायाह 9:6-7. पूरा हुआ: मत्ती 28:18; यूहन्ना 3:35; 13:3; प्रकाशितवाक्य 1:5; 17:14; 19:16.

22. राजा के रूप में, यीशु प्रतिज्ञा व ईशतन्त्र की पराकाष्टा तक पहुँचा।

भविष्यद्वाणी: 2 शमूएल 7:11-16 (पूर्व 910 ई.प.); 1 इतिहास 17:11-14 (लगभग 400 ई.पू.). पूरा हुआ: 2 इतिहास 6:16 (शरत् 56 ई.प.); 1 पतरस 2:9-10 (62-63 ई.प.)

वर्णन: मसीह के राज्य में महत्वपूर्ण कार्य उसकी वाचा का पूरा किया जाना होगा। परमेश्वर द्वारा दाऊद से की गयी प्रतिज्ञाओं को हम वाचा के रूप में देखते हैं, जिसे परमेश्वर ने दाऊद के साथ बांधा कि ' तेर कुल में मेरे सामने इस्राएल की गद्दी पर विराजनेवाले सदा बने रहेगें। आज भी इसे परमेश्वर के नियमित प्रकाश में बांधी गयी ज्योति की वाचा के रूप में देखा जाता है,जिसका प्रारम्भ कुलपतियों के साथ हुआ था।

2शमूएल 7 में बांधी गयी परमेश्वर की वाचा को हम दाऊद के वंश में सीधे तौर पर पूरा होता हुआ देखते है, अर्थात सुलैमान व यहूदा के राज्य में। लेकिन दाऊद के साथ 1 इतिहास 17:10-14 में बांधी गयी वाचा का पूरा होना मसीह व उसके राज्य के आने पर ही खत्म होगा। प्रेरणा पाकर लिखने वाला लेखक अपने भाव को बदल देता है"तरा उत्तराधिकारी जो तेरे ही वंश से पैदा होगा" से "तेरी सन्तान, जो तेरे निज पुत्रों से पैदा होंगी" इसके बाद वह अपने भाव बदलते हुए लिखता है 'मैं उसके राज्य के सिंहासन को हमेशा के लिए स्थिर करूंगा" से " तेरे घराने में तेरी गद्दी पर विराजमान होने वाली को कमी न होगी'', इस बात को कहते हुए वह अपने सम्बोधन को शमुएल की पुस्तक में राजा सुलैमान से फेरकर इतिहास की पुस्तक में आने वाले मसीह की ओर ले जाता है। इस प्रकार से आत्मा से प्रेरित होकर लिखने वाला इतिहास का लेखक यह प्रगट करता है कि पुराने नियम में बांधी गयी यह वाचा मसीह और उसके राज्य अर्थात यीशु मसीह व उसके राज्य के साथ पूरी होगी। यह हमें यशायाह 53:3 की याद दिलाता है ' और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बाँधूँगा, अर्थात दाऊद पर की अटल करूणा की वाचा।"

दाऊद की गद्दी का अर्थ परमेश्वर के सिंहासन से है (1 इतिहास 28:5;2 इतिहास 9:8; 13:8)। इसी कारण धर्मशास्त्र में दाऊद के कुल में उत्पन्न हुआ प्रत्येक राजा बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए ही उसके घराने के सारे लोगों को दाऊद के समान अपनी बुलाहत के प्रति संवेदनशील व अपनी बुलाहट के प्रति ज़िम्मेदार होना बहुत जरूरी है। हालांकि दाऊद के कुल के बहुत से राजा धार्मिक जिम्मेदारी को पहिचानने में नाकामयाब रहे, लेकिन आने वाला मसीह कभी असफल नहीं होगा!

23. राजा के रूप में, यीशु मसीह ने अपने पहले आगमन पर अपने राज्य की स्थापना की।

भविष्यद्वाणी: दानिय्येल 2:44; 7:14(605-537+2 शताब्दी ई.पू); यशायाह 16:4-5, पूरा होना: मत्ती 12:28।

दानिय्येल ने एक तरफ तो संसार के राज्य व उसकी विधियों को और दूसरी ओर परमेश्वर के राज्य और ''मनुष्य सरीखा" के बीच सम्बन्ध को प्रगट किया। यशायाह ने राजा हिजिकिय्याह के राज्य के निर्माण को प्रगट किया जो कि मसीह के राज्य के निर्माण को दर्शाता है।

24. राजा के रूप में, यीशु ने शैतान को बांध दिया।

भविष्यद्वाणी: उत्पत्ति 3:15 (2100-1407 ई.पू.). पूरा हुआ: इब्रानियों 2:14; 1यूहन्ना 3:8; मत्ती 12:28-29; यूहन्ना 12:31-32.

25. राजा के रूप में, यीशु ने धार्मिकता को स्थापित किया।

भविष्यद्वाणी: यिर्ममाह 23:5-6; 33:15-16. पूरा हुआ: मत्ती 2:2; 1इतिहास 1:30; 2पतस 3:13 (64 ई.प.)

26. राजा के रूप में, सारे देख उसकी आज्ञा का पालन करेंगे।

भविष्यद्वाणी:उत्पत्ति 49:10(याकूब, 2007-1860 ई.पू.); यशायाह 45:21-23.पूरा हुआ:फिलिप्पियों 2:10-11(अन्त 61 ई.प.)

27. यीशु परमेश्वर के सच्चे समाज के कोने का पत्थर है।

भविष्यद्वाणी: भजन संहिता 118:22; यशायाह 28:16. पूरा हुआ: मत्ती 21:33-46; प्रेरितों के काम 4:11 (61 ई.प.); 1 पतरस 2:7.

ड़ यीशु मसीह के दु:खों व मृत्यु के सन्दर्भ म भविष्यद्वाणियां

28. यीशु का गलील में अनादर हुआ(परदेशी, कोई मिश्रित रक्त वाला व्यक्ति)

भविष्यद्वाणी: यशायाह 49:7, 53:2-3. पूरा हुआ: यूहन्ना 1:45-46, 7:41-42.

29. अकारण लोग यीशु से नफरत करते थे।

भविष्यद्वाणी: भजन संहिता 69:4. पूरा हुआ: यूहन्ना 15:25.

30. यीशु की सामरिया में बेईज्जती की गयी, उसे दुष्टात्माग्रसित,पापी और पागल तक कहा गया।

भविष्यद्वाणी: भजन संहिता 69:9. पूरा हुआ: रोमियों 15:3; (यूहन्ना 8:48; 9:24; 10:19).

31. यीशु ने पलटकर कोई जवाब नहीं दिया और न ही झुझंलाया।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 53:7a. पूरा हुआ: 1 पतरस 2:23.

32. यीशु ने लादू के बच्चे पर सवार होकर यरूशलेम में प्रवेश किया।

भविष्यद्वाणी: जर्कयाह 9:9 (520-518 ई.पू.); भजन संहिता 118:26. पूरा हुआ: मत्ती 21:1-11; 23:39.

33. यीशु को तीस चाँदी के सिक्कों में बेचा गया जिससे बाद में एक खेत खरीदा गया।

भविष्यद्वाणी: जर्कयाह 11:12-13; यिर्मयाह 19:1-15. पूरा हुआ: मत्ती 26:14-16; 27:3-10.

34. यीशु को उसके ही मित्र द्वारा पकड़वाया गया जो उसके साथ बैठकर खाना खाता था।

भविष्यद्वाणी: भजन संहिता 41:9 (दाऊद). पूरा हुआ: मत्ती 26:20-25.

35.यीशु के चेलों ने उसे छोड़ दिया और उसके शत्रुओं ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

भविष्यद्वाणी: जकर्याह 13:7-9. पूरा हुआ: मत्ती 26:31, 50, 56,

36. यीशु पर थूका गया और उसे पीटा गया।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 50:6. पूरा हुआ: यूहन्ना 19:1; मत्ती 26:67-68.

37. यीशु को इस तरह से ले जाया गया मानों कोई किसी भेड़ को हत्या करने के लिए ले जा रहा हो।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 53:7b. पूरा हुआ: मत्ती 27:31; यूहन्ना 1:29.

38. यीशु को क्रूस पर चढाया गया, लोगों द्वारा उसका ठट्ठा किया व निन्दा की गयी, और परमेश्वर द्वारा उसे छोड़ दिया गया।

भविष्यद्वाणी: भजन संहिता 22:1-32 (दाऊद); यशायाह 53:5. पूरा हुआ: मत्ती 27 और लूका 23.

39. यीशु को पीने के लिए सिरका दिया गया।

भविष्यद्वाणी: भजन 67:21. पूरा हआ: मरकुस 15:23,36.

40. यीशु मरा (धरती पर जीवतों से उसका सम्बन्ध टूट गया)।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 53:8. पूरा हुआ: लूका 23:46.

41. जिन लोगों ने उसे भेदा था उन्होंने ही उसकी ओर दृष्टि की।

भविष्यद्वाणी: जकर्याह 12:10. पूरा हुआ: यूहन्ना 19:34,37 (एक भाले के साथ); यूहन्ना 19:18; 20:25,27 (क्रूस पर एक कील के साथ).

42. यीशु धनी मनुष्य की कब्र में गाड़ा गया।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 53:9. पूरा हुआ: मत्ती 27:57-60.

43. यीशु पूरी तरह से पापरहित थे।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 53:9. पूरा हुआ: 2 इतिहास 5:21.

44. यीशु हमारे पापों का पश्चाताप करने के लिए एक बलि के रूप में मरे।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 53:5-6, 10-12. पूरा हुआ: रोमियों 4:25; इब्रानियों 9:28; इफिसियों 2:13-18 (60-61 ई.प.); 1 पतरस 2:24-25.

45. यीशु की मृत्यु परमेश्वर की योजना थी।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 53:10. पूरा हुआ: प्रेरितों के काम 2:23; 4:28.

च. यीशु मसीह के पुनरूत्थान से जुड़ी भविष्यद्वाणियां।

46. यीशु मृत्यु से जी उठा।

भविष्यद्वाणी: भजन 16:10 (दाऊद); यशायाह 53:11a. पूरा हुआ: प्रेरितों के काम 2:23-32, 13:30-37.

47. यीशु तीन दिन के पश्चात मृतका में से जी उठा।

भविष्यद्वाणी: मरकुस 8:31, 9:31, 10:32-34. पूरा हुआ: मरकुस 16:1-7. तीसरे दिन जी उठने के बारे में भविष्यद्वाणी लूका (60-61 ई.प में लिखा गया) पुराने नियम की बात को पुन:दोहराता है: योना 1:17(783-743 ई.पू) और होशे 6:2(754-714 ई.पू में लिखा गया) यीशु मसीह के आने का पूरा अनुमान मरकुस 8:31 में, मरकुस 9:31 और 10:34(44-46 ई.प में लिखा गया।

छ. यीशु मसीह के स्वर्ग में उठा लिये जाने व उसके सिंहासन पर विराजमान होने से जुड़ी भविष्यद्वाणियां।

48. यीशु बादलों पर उठा लिया गया।

भविष्यद्वाणी: दानिय्येल 7:13-14. पूरा हुआ: प्रेरितों के काम 2:9-11.

49. यीशु सिंहासन पर विराजमान होने के लिए स्वर्ग पर उठा लिया गया।

भविष्यद्वाणी: भजन 110:1 (दाऊद). पूरा हुआ: प्ररितों के काम 2:33-35; (मत्ती 22:41-46, 26:64; 1 इतिहास **15:25**; इफिसियों 1:20-22; इब्रानियों 1:13).

50. यीशु मृतकों में से जी उठा, स्वर्ग पर चढ़ गया और उसे सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 52:13; (45:23). पूरा हुआ: फिलिप्पियों 2:9-11.

51.यीशु को सारा अधिकार प्रदान किया गया है।

भविष्यद्वाणी: दानिय्येल 7:13-14; (2:44). पूरा हुआ: मत्ती 28:18.

52. यीशु के राज्य का अन्त कभी न होगा।

भविष्यद्वाणी: दानिय्येल 7:13-14; (2:44). पूरा हुआ: इब्रानियों 12:28.

ज. यीशु मसीह के दूसरे आगमन से जुड़ी हुई भविष्यद्वाणियां।

53. दूसरे आगमन से पहले कंगूरे पर उजाड़नेवाली घृणित वस्तुए दिखाई देंगी।

भविष्यद्वाणी: दानिय्येल 9:27; 11:31; 12:11. पूरा हुआ: इतिहास में तीन समय:

भविष्यद्वाणी: दानिय्येल 9:27; 11:31; 12:11 पूरा होना : इतिहास में तीन बार:

-167 ई.पू में सीरिया के एन्टिओकस 4 के द्वारा(1 मकाबीस 1:29-64)(100 ई.पू)

-70 ई.प. तीतुस और रोमियो द्वारा (मत्ती 24:15;लूका 21:20-24)

-मसीह के दूसरे आगमन से पूर्व महाक्लेश के समय(2 थिस्लुनिकियों 2:1-4,शरद 50ई.प; प्रकाशितवाक्य13:14-15)

54. दूसरे आगमन से पहले महाक्लेश का समय आयेगा।

भविष्यद्वाणी: दानिय्येल 12:1. पूरा हुआ: मत्ती 24:21-29a; प्रकाशितवाक्य 11:7-10.

55. यीशु मसीह का दूसरा आगमन एकाएक और अनापेक्षित समय पर होगा।

भविष्यद्वाणी: मत्ती 24:43-44. पूरा हुआ: 1थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 पतरस 3:10; प्रकाशितवाक्य 3:3,16:15.

56. दूसरे आगमन के समय आकाश की सारी शक्तियां हिलाई जाएंगी।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 13:10; 34:4; यहेजकेल32:7-8; योएल 2:31 (500-400 ई.पू.). पूरा हुआ: प्रकाशितवाक्य 6:12-13, 8:12; मत्ती 24:29.

57. दूसरे आगमन के दौरान यीशु बादलों में प्रगट होगा।

भविष्यद्वाणी: दानिय्येल 7:13. पूरा हुआ: मत्ती 24:30, 26:64; प्रकाशितवाक्य 1:7.

58. जिन लोगों ने यीशु को भेदा था वे उसे उसके दूसरे आगमन पर देखेगें।

भविष्यद्वाणी: जकर्याह 12:10. पूरा हुआ: प्रकाशितवाक्य 1:7.

59. यीशु विश्वासियों को मृतकों में से जीवित करेगा और वे यीशु में होकर परमेश्वर के चेहरे को देखेगें।

भविष्यद्वाणी: अय्यूब 19:25-27. पूरा हुआ: यूहन्ना 5:28-29; प्रकाशितवाक्य 22:4.

60.यीशु मसीह धार्मिकता और न्याय के साथ लोगों का न्याय करेगा।

भविष्यद्वाणी: यशायाह 11:3-5. पूरा हुआ: यूहन्ना 7:24.

61. यीशु अपने हाथ में लोहे का राजदण्ड लेकर दुष्ट देशों पर राज्य करेगा।

भविष्यद्वाणी: भजन 2:9. पूरा हुआ: प्रकाशितवाक्य 12:5.

झ. यीशु मसीह के ईश्वरीय स्वभाव के बारे में भविष्यद्वाणी।

62. यीशु आदि है, वह अनन्तता से ही विद्यमान था।

भविष्यद्वाणी: नीतिवचन 8:22-23 (971-685 ई.पू.). पूरा हुआ: यूहन्ना 1:1; प्रकाशितवाक्य 21:6.

63. यीशु परमेश्वर का इकलौता पुत्र है।

भविष्यद्वाणी: भजन 2:7 (दाऊद). पूरा हुआ: लूका 1:32; मरकुस 1:11; प्रेरितों के काम 13:33; इब्रानियों 1:5.(मैनुएल2, परिशिष्ट 1 देखें)

वर्णन: परमेश्वर के अभिषिक्त ने उन्हीं बातों में लेकर बोला जो परमेश्वर ने उससे कहा था: 'तू मेरा प्रिय पुत्र है,आज के दिन मैंने तुझे उत्पन्न किया है(मैं तेरा पिता बन गया हूँ)।" ऐसी बातें कभी परमेश्वर ने स्वर्गदूतों स नहीं कहीं थी। निश्चय ही स्वर्गदूतों को सामुहिक तौर पर ''परमेश्वर के पुत्रों" के रूप में सम्बोधित किया गया है(अय्यूब 1:6; 38:7), लेकिन किसी को भी व्यक्तिगत तौर 'परमेश्वर का पुत्र' करके सम्बोधित नहीं किया गया था।

यह ईश्वरीय आदेश(भजन 2:7-9) दाऊद के वंशजां द्वारा इस्तेमाल की गयी राज्याभिषेक की पद्धति के मूलपाठ को समावेशित करता है, जिस पद्धति व भाषा का पुराने जमाने में पूर्व के नजदीक राज्याभिषेक विधी में बहुतायत से इस्तेमाल किया गया। इन बातों को दाऊद के कुल में उत्पन्न हुए मसीहा की जीवन में निश्चय तौर पर पाया जाएगा। समय के पूरा होने पर वह उठ खड़ा होगा। यीशु मसीह से जोड़कर कहा गया ''परमेश्वर का पुत्र'' कभी उसके शारीरिक सम्बन्ध को प्रगट नहीं करता था,लेकिन उससे सदैव उकसा आत्मिक रिश्ता प्रगट होता था।

यह हमेशा इस बात को प्रगट करता है कि यीशु में ईश्वरीय स्वभाव पाया जाता है। हालांकि यीशु ने अपना मानवीय स्वभाव केवल मरियम के द्वारा पाया, लेकिन उसे परमेश्वर पिता और पवित्र आत्मा की ओर से आत्मिक स्वभाव प्राप्त हुआ(लूका 1:26-37)। पुराने नियम में परमेश्वर कहता है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है(भजन संहिता 2:6-7)। नये नियम में परमेश्वर कहते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र है(मत्ती 3:16-17)। यीशु मसीह भी इस बात का दावा करते हैं कि वह स्वयं परमेश्वर का पुत्र है(मत्ती 26:63:64; 27:43)। प्रेरित पौलुस कहता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है(रोमियों 1:3-4)। 'पुत्र' शब्द के केवल आत्मिक मायने हैं। पुत्र के रूप में, यीशु मसीह वह परमेश्वर है जिसने, अपना ईश्वरीय स्वभाव त्यागे बिना, मानवीय स्वरूप को धारण किया और कुवारी मरियम के द्वारा अपनी सृष्टि और मानवीय इतिहास में कदम रखा(फिलिप्पियों 2:6-7; कुलुस्सियों 1:15; 2:9)। यीशु मसीह "परमेश्वर हमारे साथ" बन गया(यशायाह 7:14; मत्ती 1:23)। यीशु मसीह परमेश्वर को 'वचन' है जो सृष्टि और मानवीय इतिहास में प्रगट हुआ(यूहन्ना 1:1,14,18)।

"इस दिन" यीशु मसीह की उन्नति या पदोन्नति को प्रगट करता है: अर्थात उसके पुनरूत्थान, उसके उठा लिए जाने और स्वर्ग में उसके राजा के रूप में राज्याभिषेक को प्रगट करता है। इसके अलावा उसे परमेश्वर का पुत्र के रूप में राजकीय पदाधिकार प्रदान किया गया(रोमियों 1:3)। उसके बाद महायाजक के रूप में नियुक्त किया गया जो सदा काल के लिए धार्मिकता का राजा है(भजन 110:4)। यीशु आदि से ही परमेश्वर का पुत्र था, जिसने काफी कष्ट उठाकर अपनी आज्ञाकारिता को प्रमाणित किया, वह जी उठा और सिंहासन पर विराजमान हो गया। इसी कारण वह अपने सारे अधिकारों का इस्तेमाल कर सका क्योंकि वे अधिकार उसकी मीरास में शामिल थे (मत्ती 28:19)

भाव:"उसका इकलौता पुत्र"(यूहन्ना 1:18) द्वारा किसी शारीरिक वस्तु को सम्बोधित नहीं किया गया। बाकि सब प्रकार के पुत्रत्व की कभी कभी कहीं शुरूआत हुई थी, लेकिन यह बात परमेश्वर के लिए कही गयी है इसलिए इसका सम्बन्ध अनन्तता से है। यह भाव परमेश्वर के त्रीएक पुत्रत्व को दर्शाता है: अर्थात परमेश्वर पिता,पुत्र और पिता के अधिक घनिष्ठ व अथाह सम्बन्ध को दर्शाता है। परमेश्वर आत्मा है और अगम्य ज्योति में रहता है(1 तीमुथीयुस 6:16)। वह जन जिसने परमेश्वर को जगत प्रत्यक्ष रूप में (अर्थात मानव रूप में प्रगट किया है)प्रगट किया है वह यीशु है (यूहन्ना 1:18; मत्ती 11:25-30)।

भजन संहिता 2 8-9 यीशु मसीह की ईश्वरीय ओर सर्वश्रेष्ट सामर्थ को दर्शाते हैं। परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र को संसार की सारी जातियों पर उद्धार (पद 8) या न्याय के द्वारा (9) विजय प्रदान की है।

64. यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

भविष्यद्वाणी: 2 शमुएल 7:11-16; 1इतिहास 17:11-14 पूरा होना : लूका 1:32; इब्रानियों 1:5

वर्णन: हालांकि दाऊद के पुत्र सुलैमान ने तुरन्त परमेश्वर के लिए मन्दिर का निमार्ण कर दिया, लेकिन घटना इस बात को साबित करती है कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा और वाचा यीशु मसीह में जाकर प्री हुई, अर्थात सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पुत्र में होकर,जो मसीह राजा भी है जिसे ''दाऊद की सन्तान" कहा गया। यीशु मसीह को "अदभुत युक्ति करने वाला, सामर्थी परमेश्वर, अनन्त पिता और शान्ति का राजकुमार भी कहा गया"। (यशायाह 9:6)।

उसका राज्य धर्म और न्याय के आधार पर सदैव स्थिर रहेगा(यशायाह 9:7)। उसका राज्य कभी समाप्त नहीं होगा(लूका 1:33)। वह वो जन है "जो वास्तव में उस मुकुट का असली हकदार है"(यहेजकेल 21:27)। वह शान्ति के द्वारा शासन करता है(मीका 5:2-5)। और उसे लोगों को अगुवा या लोगों का कप्तान कहा गया है'(यशायाह 55:4-5)।

65. यीशु मसीह को परमेश्वर कहकर सम्बोधित किया गया।

भविष्यद्वाणी: भजन संहिता 45: 6-79 (कोरह के वंशज); यशायाह 9: 6 (यशायाह 10:20-21) पूरा होना: इब्रानियों 1:8-9।

वर्णन : भजन 45 एक राजकीय विवाह को प्रगट करता है(सम्भत: यहोशापात के 870-846 ई.प) और कवि पहले दुल्हे के बारे में बात करता है(पद 1-9) और फिर दुल्हन के बारे में बताता है(पद10-17)
पुराने नियम में राजा को इस तरह की भाषा में सम्बोधित किया गया है जो एक न्यायालय या राजभवन के माहौल को प्रगट करता है। इस्राएल के राजा को परमेश्वर के उप-शासक के रूप में और एक ऐसे वंश के रूप में सम्मानित किया गया है जिसके साथ परमेश्वर ने विशेष वाचा बांधी हो।

केवल आने वाले मसीह के राज्य में ही राजगद्दी धर्म व न्याय के साथ हमेशा तक स्थिर बनी रहेगी। मसीह राजा को केवल "परमेश्वर का पुत्र" करके ही सम्बोधित नहीं किया गया(भजन संहिता 2:7; इब्रानियों 1:5), वरन उसे "परमेश्वर" करके भी सम्बोधित किया गया है(भजन 45:6-7; इब्रानियों 1:8-9)। यीशु केवल मनुष्य ही नहीं, जो दाऊद के वंश में पैदा हुआ(रोमियो 1:3), लेकिन वह परमेश्वर की महिमा और उसके प्रतिनिधित्व को धारण किये हुए परमेश्वर की है(इब्रानियों 1:3)। धर्म और न्याय केवल परमेश्वर के सिहांसन की बुनियाद नहीं (भजन 89:14), वरन मसीह के सिंहासन की भी बुनियाद है(इब्रानियों 1:8) और मसीह का सिंहासन, परमेश्वर का सिंहासन है(22:3)।